अमिल क़लीलन व उजिर कसीरन
(बुख़ारी व मुस्लिम)

अमल कम नफ़ा ज़्यादा और मंज़िल

जादू, करतब, शैतान, ख़बीस जिन्नात, आसेब, चोर, ज़ालिम और हर तरह के दुश्मन से

हिफ़ाज़त

नीज़ दुनिया और आख़िरत के बहुत से फ़वाइद पर मुश्तमिल दुआओं का मजमूआ

मुरत्तिब
(हज़रत) हाजी शकील अहमद साहब
मुजाज़े बैअत:
हज़रत अक़दस मुफ़्ती मुहम्मद हनीफ़ साहब

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ

बाद हम्द व सलात यह नाकारा नाम का हनीफ़ "काम का कसीफ़" अफ़ल्लाहु तआला अन्हु मा सदर मिनज़्ज़ुललि व इन्नहू तआला मुजीब। बअद अज़ाँ गुज़ारिश है कि मेरे करम फ़रमा बहुत ही अज़ीज़ दोस्त भाई शकील अहमद मद्दज़िलहु व सल्लमहू ने बनज़रे नुस्हे मुस्लिमीन ऐसी दुआओं का एक मजमूआ तालीफ़ फ़रमाया है कि वह सारी दुआऐं आप अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने मौक़ा बमौक़ा हज़राते सहाबा रिज़वानुल्लहि तआला अलैहिम अजमईन को तालीम फ़रमाई थीं। खुली बात है कि बफ़हवाए आयत

यह सारी दुआऐं आप की ज़बाने मुबारक से अज़ राहे वही वजूद में आईं। इस लिए यह बात लुज़ूमन साबित हो गई कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तरफ़ से ही यह इर्शाद हुआ कि मेरे बंदों से आप कहें कि वह इन कलिमात के ज़रिए मेरी बारगाह में सवाली बनें। अब खुली बात है कि जब अर्ज़ी का मज़मून ख़ुद हाकिमे आला ही का तालीम किया हुआ हो तो उस अर्ज़ी की मक़बूलियत में क्या शुबहा हो सकता है, इस लिए इस रिसालए उजाला की सारी दुआऐं हिर्ज़े जान बनाने के लायक़ हैं कि इस राह से दारैन की सलाह और फ़लाह की उम्मीद और तवक़्क़ो है।

(मुफ़्ती) मुहम्मद हनीफ़ जौनपूरी
नज़ील बम्बई

विषय सूची

बिमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अर्ज़े मुरत्तिब

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इस दुनिया में हर इंसान को बहुत सी नेमतें अता फरमाईं हैं, उन नेमतों के साथ साथ कुछ परेशानियाँ भी हैं जो इंसान के साथ हर दम लगी रहती हैं। इंसान उन परेशानियों को दूर करने के लिए अपनी अक़ल और लोगों के तजरबे की बुनियाद पर कुछ दुनियवी असबाब इख़्तियार करता है। उन असबाब को इख़्तियार करने के बाद कभी तो मतलूबा नतीजा बरआमद नहीं होता है और परेशानियाँ जूँ की तूँ बाक़ी रहती हैं। जब असबाब इख़्तियार करने के बावजूद परेशानियाँ दूर नहीं होतीं तो आज कल के हालात में उमूमन यह देखा गया है कि फिर ऐसे लोग यह सोचने लगते हैं कि

कहीं किसी ने कुछ 'करा' तो नहीं दिया? शक की सूई कभी तो रिश्तेदार की तरफ, कभी पड़ोसी की तरफ़ और कभी पार्टनर की तरफ़ घूमने लगती है और फिर यह बेचारे अपने ख़्याल के मुताबिक़ अपनी परेशानियाँ दूर करने के लिए आमिलों के पास जाना शुरू कर देते हैं।

चूँकि इस दौरे इनहितात में हर शोबे के अंदर अहले इख़्लास की कमी दिखाई देती है, लिहाज़ा अमलियात की लाइन में भी मुख़्लिस आमिलीन कम और पेशावर आमिलीन ज़्यादा नज़र आते हैं। इस लिए लोग अकसर उन्हीं पेशावर आमिलों के हथ्थे चढ़ जाते हैं और मसअला सुलझने के बजाए मज़ीद उलझता चला जाता है। जो शख़्स एक मर्तबा किसी पेशावर आमिल के चक्कर में फंस जाता है

वह फिर जल्दी उसके चंगुल से निकल नहीं पाता और अपना माल और वक़्त तो बरबाद करता ही है, बाज़ औक़ात इज़्ज़त व इसमत से भी हाथ धो बैठता है, ईमान का तो अल्लाह ही हाफ़िज़ है लेकिन:

मरज़ बढ़ता गया जूँ जूँ दवा की

के मिसदाक़ परेशानियाँ कम होने के बजाए बढ़ती ही चली जाती हैं। इस तकलीफ़ देह सूरते हाल को देख कर दिल में यह दाईया पैदा हुआ कि क्यों न हज़रत नबिए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीम करदा दुआऐं और आप के वह मामूलात आम किए जाऐं जिन पर अमल करके हर शख़्स इस करनी करानी के चक्कर से महफ़ूज़ रह सकता है और अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता कोई गिरफ़्तार भी हो गया

तो वह अपना इलाज आप कर सकता है, उसे किसी पेशावर आमिल के पास जाने की क़तअन कोई ज़रूरत नहीं होगी।

पेशे नज़र किताबचे में सब से पहले मंज़िल के उनवान से क़ुरआने मजीद की वह आयात लिखी हुई हैं जिनका पढ़ना ख़ास तौर पर जादू, करतब, आसेब वग़ैरह से हिफ़ाज़त के सिलसिले में बहुत ही नाफ़े और मुजर्रब है। मंज़िल के ख़त्म पर कुछ दुआऐं भी तहरीर की गई हैं जिन का पढ़ना मज़कूरा फ़ायदे के हुसूल के लिए नुसख़ए अकसीर है। उसके बाद वह दुआऐं लिखी गई हैं जिन्हें अपना मामूल बना कर हर आदमी दुनिया और आख़िरत के बेशुमार फ़वाइद हासिल कर सकता है।

आप इस किताबचे में दर्ज शुदा (लिखे

गये) अज़कार को अपना मामूल बना कर देखें, हमें उम्मीद ही नहीं बल्कि यक़ीने कामिल है कि इन कुरआनी आयात और हज़रत नबिए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीम करदा दुआओं पर अमल करके आप हर तरह की मुसीबत और परेशानी से नजात पा सकते हैं, ताहम बिलानाग़ा पाबंदी के साथ पढ़ना और कामिल यक़ीन के साथ पढ़ना शर्त है, उसके बग़ैर मक़सद हासिल नहीं होगा।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमारी इस हक़ीर कोशिश को शर्फ़े क़बूलियत अता फरमाऐ, नीज़ इस किताबचे की तरतीब में जिन अहबाब का हमें तआउन हासिल रहा और अकाबिर की जिन किताबों से हम ने इस्तिफ़ादा किया, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त

अपनी शायाने शान उन्हें उसका बदला इनायत फरमाऐ, आमीन बिजाही सय्यिदिल मुरसलीन।

नोट: नमाज़ का छोड़ देना हर तरह की परेशानियों और मुसीबतों को अपने घर बुलाना है, लिहाज़ा ख़ूब अच्छी तरह समझ लें कि इन अज़कार से पूरा पूरा नफा उसी वक़्त हासिल होगा जब आप पंजवक़्ता नमाज़ पाबंदी के साथ पढ़ने का ऐहतिमाम करेंगे।

मुहताजे दुआ

शकील अहमद, पनवेल, बम्बई

बरोज़ जुमा, २७ रमज़ानुल मुबारक १४३३ हि०

१७ अगस्त २०१२ ई०

पढ़ें, पढ़ें, ज़रूर पढ़ें

ईमान की हिफ़ाज़त की दुआ

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि यल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: शिर्क तुम लोगों में काले पत्थर पर चियूंटी की रफ़्तार से भी ज़्यादा पोशीदा है। क्या मैं तुम्हें ऐसी दुआ न बतलाऊँ कि जब तुम उसे पढ़ लोगे तो छोटे शिर्क और बड़े शिर्क से नजात पा जाओगे? हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि यल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! ज़रूर बताइए, हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया रोज़ाना तीन मर्तबा यह दुआ माँगा करो:

अमल कम नफ़ा ज़्यादा और मंज़िल

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ اَنْ اُشْرِكَ بِكَ وَاَنَا اَعْلَمُ

وَاَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَآ اَعْلَمُ۔ (کنز العمال جلد ۳ باب الشرک الخفی)

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक अन उश्रिक बिक व अना आलमु व अस्तग़्फ़िरूक लिमा ला आलम।(कंज़ुल उम्माल जि. ३ बाबुश्शिर्कुल ख़फ़ी)

मंज़िल पढ़ने का तरीक़ा

रोज़ाना सुबह व शाम या सोने से क़ब्ल एक मर्तबा हल्की आवाज़ से पढ़ लिया करें, अगर हिफ़्ज़े मकान या दूकान के लिए पढ़ें तो मकान या दूकान ही में उसका विर्द करें, एक सूरत यह भी है कि पढ़ने के बाद पानी के घड़े में दम कर दें और उस पानी को मकान या दूकान में छिड़क दें, आसेब और जिन्न की शिकायत हो तो पढ़ कर दम करने

का मामूल बना लें, बेहतर यह है कि अगर चालीस दिन तक मुसलसल पढ़ें और दम करें और उस पानी को पीऐं तो इंशा अल्लाह आसेब, सेहर व करतब वग़ैरह का असर ज़ायल हो जाएगा। इसी तरह अगर किसी जगह चोर, डाकू से या ज़ालिमों के ज़ुल्म और दरिन्दों से हिफ़ाज़त मतलूब हो तो उस जगह इस का विर्द करें, हर क़िस्म की बला और मुसीबत को दूर करने के लिए भी इसका ऐहतिमाम निहायत मुजर्रब है। इसे ख़ुद भी पढ़ें और बच्चों और औरतों को भी इस के पढ़ने की ताकीद करें, इंशा अल्लाह हर क़िस्म की बलाओं और परेशानियों से हिफ़ाज़त रहेगी और ख़ुदा की ग़ैबी मदद व नुसरत शामिले हाल होगी।

हज़रत मौलाना मुहम्मद तलहा साहब दामत बरकातुहुम (इब्ने हज़रत मौलाना

मुहम्मद जकरिया साहब काँधलवी) मंज़िल के बारे में लिखते हैं कि "हमारे ख़ानदान के अकाबिर अमलियात और अदइया में इस मंज़िल का बहुत ऐहतिमाम फरमाया करते थे और बचपन ही में इस मंज़िल को ऐहतिमाम से याद कराने का मामूल था''।

नोट: हाशिये में मंज़िल की आयात के चंद फ़ज़ाइल व बरकात लिखे गये हैं जो अहादीस से माख़ूज़ हैं, इन फ़ज़ाइल को बतौर वज़ीफ़ा न पढ़ें, बल्कि ज़ौक़ व शौक़ पैदा करने के लिए कभी कभी देख लिया करें, बतौर वज़ीफ़े के सिर्फ़ आयाते मुबारका पढ़ा करें।

मंज़िल की आयात अगर बग़ैर वज़ू पढ़ने की ज़रूरत पेश आए तो आयाते मुबारका को हाथ से न छूऐं, अलबत्ता ख़ाली जगह से पकड़ सकते हैं, जबकि पूरे कुरआन मजीद छूने में यह रिआयत नहीं है।(अज़ मुरत्तिब)

मंज़िल

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

○ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ○ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ

نَسْتَعِيْنُ ○ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ○

صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ

عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ○

१. हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि सूरह फातेहा में हर बीमारी से शिफा है। (दार्मी, बेहक़ी)

फायदा: इस को पढ़ कर बीमारों पर दम करने की अहादीस में तरग़ीब है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

الٓمّٓ ○ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ هُدًى

لِّلْمُتَّقِيْنَ ○ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ

الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ○ وَالَّذِيْنَ

يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ

وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ○ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى

مِّنْ رَّبِّهِمْ ۙ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ○

१. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि यल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि सूरह बक़रा की दस आयतें ऐसी हैं कि अगर कोई शख़्स उनको रात में पढ़ ले तो उस रात को जिन्न व शैतान घर में दाख़िल न होगा और उसको और उसके अहल व अयाल को उस रात में कोई आफ़त, बीमारी और रंज व ग़म वग़ैरह नागवार चीज़ पेश न आएगी और अगर यह आयतें

وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ

الرَّحِيْمُ ۝ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ ۵

لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ

اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ مَا

خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا

بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ

وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ۝

....

किसी मजनून पर पढ़ी जाऐं तो उसको इफ़ाक़ा हो जाएगा, वह दस आयतें यह हैं: चार आयतें शुरू सूरह बक़रह की, फिर तीन आयतें दरमियानी यानी आयतल कुर्सी और उसके बाद की दो आयतें फिर आख़िर सूरह बक़रह की तीन आयतें। (मआरिफुल कुरआन)

لَآ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ ۚ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ

الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْ ۢ بِاللّٰهِ

فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۚ لَا انْفِصَامَ

لَهَا ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ

اٰمَنُوْا يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۵

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْلِيٰٓـُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ

يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ اِلَى الظُّلُمٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ

اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِنْ

تُبْدُوْا مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ

بِهِ اللّٰهُ ؕ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ

يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اٰمَنَ

الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَ

الْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ

وَرُسُلِهٖ ۣ قف لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۣ قف

وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا

وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝ ع

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا

كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا لَا

१. हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने सूरह बक़रह को उन दो आयतों (आमनर्रसूल ता ख़त्मे सूरह) पर ख़त्म फ़रमाया है जो मुझे उस ख़ज़ानए ख़ास से अता फ़रमाई हैं जो अर्श के नीचे है, इस लिए तुम ख़ास तौर पर इन आयतों को सीखो और अपनी औरतों और बच्चों को भी सिखाओ। (मुसतदरक, हाकिम, बेहक़ी)

تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا

تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ

مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ

لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۗ وَاغْفِرْ لَنَا ۗ

وَارْحَمْنَا ۗ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى

الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَ الْمَلٰٓئِكَةُ

وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا ۢ بِالْقِسْطِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ ط

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ

१. हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि यल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व

تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ز وَتُعِزُّ مَنْ

تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ط بِيَدِكَ الْخَيْرُ ط اِنَّكَ

عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ○ تُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ

وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ ز وَتُخْرِجُ الْحَىَّ مِنَ

الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَىِّ ز وَتَرْزُقُ

مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ○ ے

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

....

सल्लम ने फरमाया: जो शख़्स हर फ़र्ज़ नामज़ के बाद आयतल कुर्सी, 'शहिदल्लाह' से 'अल अज़ीज़ुल हकीम' तक और 'कुलिल्लाहुम्म मालिकल मुल्कि' से 'बिग़ैरि हिसाब' तक पढ़ेगा तो अल्लाह तआला उसके सब गुनाह माफ फराऐंगे और जन्नत में जगह देंगे और उसकी ७० हाजतें पूरी फरमाऐंगे, जिन में कम से कम हाजत उसकी मग़्फ़िरत है। (रूहुल मआनी)

فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ قف

يُغْشِى الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا لا وَّالشَّمْسَ

وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍ م بِاَمْرِهٖ ط اَلَا لَهُ

الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ط تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ○

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ط اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ

الْمُعْتَدِيْنَ ○ج وَلَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ بَعْدَ

....

१. कुरआन मजीद की यह तीनों आयात ('इन्न रब्बकुमुल्लाह' से 'मुहसिनीन' तक) दफ़अे मज़र्रत के लिए मुजर्रब और मशहूर हैं।

२. हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि यल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया जो शख़्स सुबह होते ही और शाम होते ही यह दो आयतें ('कुलिदऊल्लाह' से व कब्बिरहु तकबीरा' तक) पढ़ ले तो उसका दिल उस दिन और उस रात में मुर्दा न होगा। (अद्देलमी)

اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ؕ اِنَّ رَحْمَتَ

اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ○ ۱

قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ اَيًّامَّا

تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ

بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ

سَبِيْلًا ○ ۱

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ

يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِيٌّ

१. 'व कुलिल हम्दु लिल्लाहि' आख़िरी आयत तक, आयते इज़्ज़त है।(मुसनदे अहमद)

२. हज़रत इबराहीम बिन हारिस तैमी रज़ियल्लाहु अन्हु अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हम को हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक सरिये में भेजा, जाते वक़्त यह वसीयत फरमाई

مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ○ ۲

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا

لَا تُرْجَعُوْنَ ○ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَآ اِلٰهَ

اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ○ وَمَنْ يَّدْعُ

مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا

حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ○

कि हम सुबह और शाम होते ही यह आयतें पढ़ लिया करें:

'अ फहसिबतुम अन्नमा ख़लक़नाकुम' पूरी आयत, तो हम पढ़ते रहे, हमें माले ग़नीमत भी मिला और हमारी जानें भी महफ़ूज़ रहीं। (इब्ने सुन्नी)

फ़ायदा: चूंकि इस ज़माने में सरिए का मौक़ा मयस्सर नहीं है, लिहाज़ा जब कभी किसी सफ़र पर जाने का मौक़ा हो तो यह दुआ पढ़ लिया करे, इंशा अल्लाह सलामती और आफ़ियत के साथ लौटेगा।

وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ۝ ۱؎

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ۝ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ۝

فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ۝ اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ۝

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ

الْمَشَارِقِ ۝ اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ

اِلْكَوَاكِبِ ۝ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ۝

لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ

كُلِّ جَانِبٍ ۝ دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۝

اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ

१. सूरह साफ़्फ़ात की यह इबतिदाई आयात दफ़अे मज़र्रत के लिए बहुत मुजर्रब हैं।

ثَاقِبٌ ۝ فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ

خَلَقْنَا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ ۝ ۱؎

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ

تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

فَانْفُذُوْا ؕ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ۝ فَبِاَيِّ

اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا

شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ۝

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ فَاِذَا انْشَقَّتِ

السَّمَآءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ۝ فَبِاَيِّ

اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْئَلُ

عَنْ ذَنْۢبِهٖٓ اِنْسٌ وَّلَا جَآنٌّ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ

عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ

خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ

لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ۝ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا

هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ

الرَّحِيْمُ ۝ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ

१. हज़रत मअक़िल बिन यसार से रिवायत है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: जो शख़्स सुबह के वक़्त तीन मर्तबा 'अऊज़ु बिल्लाहिस समीअिल अलीमि मिनश्शैतानिर्रजीम' पढ़े और उसके बाद सूरह हश्र की आख़िरी तीन आयतें 'हुवल्लाहुल्लज़ी' से आख़िर सूरत तक पढ़े तो अल्लाह तआला ७० हज़ार फ़रिश्ते मुक़र्रर फ़रमा देते हैं जो शाम तक उसके लिए दुआए रहमत करते हैं और अगर उस दिन वह मर गया तो उसे शहादत की मौत नसीब होगी और जिस ने शाम के वक़्त यही कलिमात पढ़ लिए तो उसे भी यही फ़ज़ीलत हासिल होगी। (तफ़्सीरे मज़हरी बहवाला तिर्मिज़ी)

اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ

الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ

عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ

الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِي

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا

اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ۝ يَّهْدِيْٓ اِلَى الرُّشْدِ

فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ۝ وَّاَنَّهٗ

تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۝

१. कुरआन मजीद की यह आयात ('कुल ऊहिय इलय्य' से 'शतता' तक) दफ़्अे मज़र्रत के लिए बहुत मुजर्रब और मशहूर हैं।

وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ۙ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ

وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۚ وَلَآ اَنَا عَابِدٌ

مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۗ

لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ لَمْ يَلِدْ ۙ

وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ

فِى الْعُقَدِ ۙ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ مَلِكِ النَّاسِ ۙ

اِلٰهِ النَّاسِ ۙ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۙ

الَّذِىْ يُوَسْوِسُ فِىْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ مِنَ

الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ

१. हज़रत जुबैर बिन मुतअिम रज़ि यल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन से इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम यह चाहते हो कि जब सफ़र में जाओ तो वहाँ से तुम अपने सब रूफ़क़ा से ज़्यादा ख़ुशहाल और बामुराद होकर लौटो और तुम्हारा सामान ज़्यादा हो जाए? उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलुललाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! बेशक मैं ऐसा चाहता हूँ, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: कुरआन मजीद की

आख़िरी पाँच सूरतें (सूरह काफ़िरून, सूरह नस्र, सूरह इख़्लास, सूरह फ़लक़ और सूरह नास) पढ़ा करो और हर सूरत को बिस्मिल्लाह से शुरू करो और बिस्मिल्लाह पर ख़त्म करो। (तफ़्सीरे मज़हरी)

फ़ायदा: एक रिवायत में सूरह काफ़िरून को चौथाई कुरआन के बराबर और एक रिवायत में सूरह इख़्लास को तिहाई कुरआन के बराबर फ़रमाया गया है। (तिर्मिज़ी)

हर तकलीफ़ और शर से हिफ़ाज़त का अमल

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़ुबैब रज़ि यल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: सुबह और शाम तीन तीन मर्तबा सूरेह इख़्लास, सूरेह फ़लक़ और सूरेह नास पढ़ लिया करो तो यह तुम्हारी हर तकलीफ़ देह शर से हिफ़ाज़त के लिए काफी है। (अबू दाऊद, किताबुल अदब)

जादू और ख़बीस जिन्नात से हिफ़ाज़त के आमाल

शाह अब्दुल अज़ीज़ कुद्दिस सिर्रूहू ने आयाते सहर को दफ़ऐ सहर के सिलसिले मे निहायत मुजर्रब और नफ़ा बख़्श बयान किया है। (मुजर्रबाते अज़ीज़ी, अल इतक़ान)

فَلَمَّآ اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ
الْمُفْسِدِيْنَ ○ وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ
الْمُجْرِمُوْنَ ○ وَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ○ قَالُوْٓا
اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ○
فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ○ فَغُلِبُوْا
هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا صٰغِرِيْنَ ○ اِنَّمَا صَنَعُوْا كَيْدُ
سٰحِرٍ ؕ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ اَتٰى ○

फ़लम्मा अलक़ौ क़ाल मूसा मा जिअतुम बिहिस्हिरू,इन्नल्लाह सयुबतिलुहू, इन्नल्लाह ला युस्लिहु अमलल मुफ़सिदीन, व युहिक़्क़ुल हक़्क़ बिकलिमातिही व लौ करिहल मुजरिमून, व उलक़ियस्सहरतु साजिदीन, क़ालू आमन्ना बिरब्बिल आलमीन, रब्बि मूसा व हारून, फ़वक़अल हक़्क़ु व बतल मा कानू यअमलून, फ़ग़ुलिबू हुनालिक वन्क़लबू साग़िरीन, इन्नमा सनऊ कैदु साहिरिंव्वला युफ़लिहुस्साहिरू हैसु अता।

सहर, जादू, करतब वग़ैरह से हिफ़ाज़त की दुआ

हज़रत कअ़ब बिन अहबार रज़ी यल्लाहु अन्हू फ़रमाते हैं कि, अगर मैं यह दुआ न पढ़ा करता तो यहूदी मुझे गधा बना देते:

اَعُوْذُ بِوَجْهِ اللهِ الْعَظِيْمِ الَّذِىْ لَيْسَ شَىْءٌ

اَعْظَمَ مِنْهُ وَبِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ الَّتِىْ

لَا يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَّلَا فَاجِرٌ وَبِاَسْمَآءِ اللهِ الْحُسْنٰى

كُلِّهَا مَا عَلِمْتُ مِنْهَا وَمَا لَمْ اَعْلَمْ مِنْ شَرِّ

مَا خَلَقَ وَبَرَاَ وَذَرَاَ ۔ (موطا امام مالک، کتاب الشعر، باب مایؤمر بہ من التعوذ)

अऊज़ु बिवजहिल्लाहिल अज़ीमी अल्लज़ी लैस शैउन अज़म मिन्हु व बिकलिमा तिल्लाहित ताम्मातिल्लती ला यूजाविज़ु हुन्न बर्रुंव्वला फ़ाजिंव्व बिअस्मा इल्लाहिल हुस्ना कुल्लिहा मा अ़लिम्तु मिन्हा व मा लम आलम मिन शर्रि मा ख़लक़ व ब-र-अ व ज़-र-अ।

ख़बीस जिन्नात के शर से हिफ़ाज़त की दो दुआऐं

१. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि यल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि लैलतुल जिन्न (जिस रात में आप सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम ने जिन्नात को दावत दी थी) में एक जिन्न आग का शोला लेकर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया (और आप को जलाना चाहा) तो हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! क्या मैं आप को ऐसे कलिमात न सिखा दूँ जिन्हें अगर आप पढ़ें तो उसकी आग बुझ जाए और वह मुंह के बल जा गिरे? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ज़रूर सिखाऐं हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया आप यह कमिलात कहें:

اَعُوْذُ بِوَجْهِ اللهِ الْكَرِيْمِ وَكَلِمَاتِهِ

التَّامَّةِ الَّتِیْ لَا يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَلَا فَاجِرٌ

مِّنْ شَرِّ مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ

فِيْهَا، وَمِنْ شَرِّ مَا ذَرَاَ فِي الْاَرْضِ وَمَا تَخْرُجُ

مِنْهَا، وَمِنْ شَرِّ فِتَنِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ، وَمِنْ شَرِّ

طَوَارِقِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ اِلَّا طَارِقًا يَّطْرُقُ

بِخَيْرٍ يَّا رَحْمٰنُ۔ (کتاب الدعاء للطبرانی حدیث ۱۰۵۸)

अऊज़ु बिवजहिल्लाहिल करीमि व बिकलिमातिल्लाहित्ताम्मतिल्लती ला युजाविज़ु हुन्न बर्रूंव्व ला फ़ाजिरू मिन शर्रि मा यंज़िलु मिनस्समाई व मा यअरूजु फीहा व मिन शर्रि मा ज़रअ फ़िल अर्ज़ि व मा तख़रूजु मिन्हा, व मिन शर्रि फितनिल्लैलि वन्नहारि, व मिन शर्रि तवारिक़िल्लैलि वन्नहारि इल्ला तारि-क़ंय्यतरूक़ु बिख़ैरिंय्या रहमान। (किताबु-द्दुआ लित्तबरानी हदीस १०५८)

२. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि यल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में बुख़ार की तअवीज़ का तज़किरा किया गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि वह तअवीज़ मुझे दिखलाओ, चुनान्चे आप को दिखलाया गया, आप ने फरमाया कि यह एक अहद है जिसे हज़रत सुलेमान अलैहिस-सलाम ने हवाम से लिया था (कि वह इस तअवीज़ को पढ़ने वाले को नहीं सताऐंगे), इस के पढ़ने में कोई हरज नहीं है, वह कलिमात यह हैं:

بِسۡمِ اللهِ شَجَّةٌ قَرَنِيَّةٌ مِلۡحَةُ بَحۡرٍ قَفَطَا

(مجمع الزوائد ۵/۱۹۱)

बिस्मिल्लाहि शज्जतुन क़रनिय्यतुन मिल्हतु बहरिन क़फ़ता। (अल मोजमुल कबीर, बाबुज़्ज़ा/ अल मोजमुल औसत, बाबुल मीम)

नोट: हवाम जिन्नात की एक क़िस्म है और यह बात हदीस से साबित है। (देखें बज़लुल मजहूद, किताबुल अदब)

नोट: मंज़िल से लेकर मुन्दर्जए बाला (ऊपर) तमाम

नज़रे बद से हिफ़ाज़त की दो दुआऐं

१. हज़रत हिज़ाम बिन हकीम बिन हिज़ाम रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी चीज़ को नज़र लगने का अंदेशा महसूस फरमाते तो यह दुआ पढ़ते:

اَللّٰهُمَّ بَارِكۡ فِيۡهِ وَلَا تَضُرَّهُ

अल्लाहुम्म बारिक फ़ीही व ला तज़ुर्रहू।

(इब्नुस्सुन्नी)

दुआओं तक पढ़ कर पानी पर दम करके ख़ुद भी पीऐं और अपने घर वालों को भी पिलाऐं। बेहतर यह है कि इस के लिए पानी का एक बोतल मख़सूस कर लें और हर मर्तबा पढ़ कर उस पानी में दम करें, नीज़ पानी ख़त्म होने से पहले उस में मज़ीद पानी मिला लिया करें। इसी तरह हाथों पर इस तरह दम करें कि थूक के कुछ छींटें हथेलियों पर गिरें और फिर उन हाथों को पूरे बदन पर फेरें और घर वालों पर भी दम करें।

२. हज़रत अनस रज़ि यल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाय : जब किसी चीज़ को देख कर तअज्जुब हो (और उसे नज़र लग जाने को अंदेशा हो) तो यह दुआ पढ़ लिया करो:

مَا شَآءَ اللّٰهُ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه

माशा अल्लाहु व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाह।

नज़रे बद लग जाए तो यह दुआ पढ़े

हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम ने नज़रे बद दूर करने का एक ख़ास वज़ीफा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सिखाया और फरमाया कि इसे पढ़ कर

(हज़रत) हसन और (हज़रत) हुसैन (रज़ि यल्लाहु अन्हुमा) पर दम किया करो।

इब्ने असाकिर में है कि हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास तशरीफ लाए, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस वक़्त ग़मज़दा थे। सबब पूछा तो फरमाया कि हसन व हुसैन (रज़ि यल्लाहु अन्हुमा) को नज़रे बद लग गई है। फरमाया कि यह सच्चाई के क़ाबिल चीज़ है, नज़र वाक़ई लगती है, आप ने यह कलिमात पढ़ कर उन्हें पनाह में क्यों न दिया? हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दरयाफ्त फरमाया कि वह कलिमात क्या हैं? फरमाया वह कलिमात यह हैं:

اَللّٰهُمَّ ذَا السُّلْطَانِ الْعَظِيْمِ ذَا الْمَنِّ الْقَدِيْمِ

ذَا الْوَجْهِ الْكَرِيْمِ وَلِيَّ الْكَلِمَاتِ التَّامَّاتِ وَالدَّعَوَاتِ الْمُسْتَجَابَاتِ عَافِ الْحَسَنَ وَالْحُسَيْنَ مِنْ اَنْفُسِ الْجِنِّ وَاَعْيُنِ الْاِنْسِ۔

अल्लाहुम्म ज़स्सुलतानिल अज़ीमि ज़ल मन्निल क़दीमि ज़लवजहिल करीमि वलिय्यल कलिमातित्ताम्माति वद्दअवातिल मुस्तजाबाति आफ़िल हसन वल हुसैन मिन अंफुसिल जिन्नि व आयुनिल इंसि।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ पढ़ी तो दोनों बच्चे उठ खड़े हुए और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने खेलने कूदने लगे, हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: लोगो! अपनी जानों, अपनी बीवीयों और अपनी औलाद को इस दुआ के साथ पनाह

दिया करो, इस जैसी कोई और दुआ पनाह की नहीं। (तफ़्सीरे इब्ने कसीर सूरेह क़लम आयत नम्बर ५१)

नोट: जब यह दुआ पढ़े तो 'अल हसन वल हुसैन' की जगह अपने बच्चों वग़ैरह के नाम लेकर दुआ को पूरा करे।

नफ़्स के शर से बचे रहने की दुआ

हज़रत उमर बिन हुसैन रज़ि यल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरे वालिद हुसैन को दुआ के यह दो कलिमे सिखाए जिन को वह माँगा करते थे।

اَللّٰهُمَّ اَلْهِمْنِىْ رُشْدِىْ وَاَعِذْنِىْ مِنْ شَرِّ نَفْسِىْ۔

अल्लाहुम्म अलहिमनी रूशदी व अअिज़नी मिन शर्रि नफ़्सी। (तिर्मिज़ी, किताबुद्दअवात)

नफ़्स को क़ाबू में रखने का अमल

जिस शख़्स का नफ्स उसके क़ाबू में न हो तो वह सोते वक़्त सीने पर हाथ रख कर يَامُمِيْتُ या मुमीतु (ऐ मौत देने वाले) पढ़ते पढ़ते सो जाए, इंशा अल्लाहु उसका नफ़्स उसका मुतीअ (फ़रमाबरदार) हो जाएगा। (हिस्ने हसीन फसल दहुम, असमाए हुस्ना)

शैतान के धोकों से महफ़ूज़ रहें

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि यल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया: अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि अपनी उम्मत को बतला दो कि वह :

لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

ला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाह
दस मर्तबा सुबह को
दस मर्तबा शाम को और
दस मर्तबा सोते वक़्त पढ़ा करें।

सोते वक़्त पढ़ने से वह दुनिया की आफ़तों से महफ़ूज़ रहेंगे, शाम को पढ़ने से शैतान के धोके से महफ़ूज़ रहेंगे और सुबह के वक़्त पढ़ने से मेरे (अल्लाह के) गुस्से से महफ़ूज़ रहेंगे।(कंज़ुल उम्माल जि. २ हदीस ३६०७)

आँख खुलते ही यह दुआ पढ़े

जब नींद से बेदार हो तो यह दुआ पढ़े:

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَهُوَ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ سُبْحَانَ اللّٰهِ وَلَا اِلٰهَ
اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ۔

ला इलाह इल्लल्लाहु, वहदहू ला शरीक लहू, लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हुव अला कुल्लि शैइन क़दीर, अल हम्दु लिल्लाहि व सुब्हानल्लाहि व ला इलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबरू, व ला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाह।

उसके बाद मग़्फ़िरत की दुआ करे और कहे: اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ अल्लाहुम्मग़्फ़िरली

अल्लाहुम्मग़्फ़िरली या कोई और दुआ माँगे तो अल्लाह तआला उस दुआ को क़बूल फरमाऐंगे। उसके बाद वुज़ू करे और दो रकअत नमाज़ पढ़े तो उस वक़्त पढ़ी जाने वाली नमाज़ भी क़बूल होगी। (तिर्मिज़ी)

नोट: रात को जब आँख खुले तो यह दुआ पढ़ कर कुछ न कुछ मांग ले अगरचे नमाज़ न पढ़े और पढ़ ले तो बहुत अच्छा है।

तहज्जुद के वक़्त का अमल

एक रिवायत में है कि हुज़र अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात को तहज्जुद के लिए उठते तो सब से पहले (वुज़ू करने से पहले) सूरह आले इमरान की आयतें 'इन्न फी ख़लक़िस्समावाति' से ऊलिल अलबाब' तक या 'मीआद' तक, या ख़त्मे सूरत तक पढ़ते थे। (इब्ने सुन्नी)

वुज़ू के बाद पढ़ने की एक क़ीमती दुआ

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि यल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: जो शख़्स वुज़ू करे और यह दुआ पढ़े:

سُبْحَانَكَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا

اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ۔

सुबहानक अल्लाहुम्म व बिहम्दिक अशहदु अल्ला इलाह इल्ला अंत अस्तग़्फ़िरूक व अतूबु इलैक।

तो उसे एक काग़ज़ में मुहर लगा कर अर्श के नीचे रख दिया जाता है, फिर उसे क़ियामत तक कोई नहीं खोल सकता। (अद्दुआ लित्तबरानी)

मस्जिद जाते वक़्त रास्ते में पढ़ने की दुआ

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि यल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर अकरम सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: जो शख़्स अपने घर से नमाज़ के लिए

निकले और यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ بِحَقِّ السَّآئِلِیْنَ عَلَيْكَ وَاَسْاَلُكَ بِحَقِّ مَمْشَایَ هٰذَا فَاِنِّیْ لَمْ اَخْرُجْ اَشَرًا وَّلَا بَطَرًا وَّلَا رِیَآءً وَّلَا سُمْعَةً، وَخَرَجْتُ اتِّقَآءَ سَخَطِكَ وَابْتِغَآءَ مَرْضَاتِكَ فَاَسْاَلُكَ اَنْ تُعِيْذَنِیْ مِنَ النَّارِ وَاَنْ تَغْفِرَ لِیْ ذُنُوْبِیْ اِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّآ اَنْتَ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक बिहक़्क़िस साइलीनन अलैक व अस्अलुक बिहक़्क़ि मम्शाय हाज़ा फ़इन्नी लम अख़रुज अशरंव्व ला रियाअंव्व ला बतरंव्व ला सुमअतन, व ख़रजतु इत्तिक़ाअ सख़तिक वब्तिग़ाअ मरज़ातिक फ़अस्अलुक अंतुईज़ुनी मिनन्नारि व अंत- ग़्फ़िर ली ज़ुनूबी इन्नहू ला

यग़्फ़िरूज़ ज़ुनूब इल्ला अंत।

तो अल्लाह तआला उसकी तरफ मुतवज्जह होते हैं और ७० हज़ार फरिश्ते उसके लिए इस्तिग़फ़ार करते हैं।(इब्ने माजा)

नमाज़ के बाद की दुआऐं

जहन्नम से आज़ादी का परवाना

हज़रत मुस्लिम बिन हारिस तमीमी रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि उन्हें हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चुपके से इर्शाद फ़रमाया : जब तुम मग़्रिब की फ़र्ज़ नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाओ तो ७ मर्तबा :

اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِيْ مِنَ النَّارِ

अल्लाहुम्म अजिरनी मिनन्नार

पढ़ लिया करो। अगर तुम उसी रात

वफ़ात पा जाओगे तो ख़ुदा तआला तुम्हें जहन्नम से आज़ादी का परवाना मरहमत फरमाऐंगे, इसी तरह जब तुम फ़ज्र की फर्ज़ नमाज़ से फारिग़ हो जाओ तो सात मर्तबा (मज़कूरा दुआ) पढ़ लिया करो। अगर तुम उस दिन इंतिक़ाल कर गए तो जहन्नम से आज़ादी का परवाना तुम्हारे लिए लिख दिया जाएगा। (अबू दाऊद) मुसनदे अहमद में मज़कूर है कि यह दुआ किसी से बात चीत करने से पहले पढ़नी चाहिए। (मुसनदे अहमद)

पागलपन, जुज़ाम, अंधेपन् और फ़ालिज से हिफ़ाज़त की दुआ

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत क़बीसा बिन

मुख़ारिक़ से फ़रमाया: कि जब तुम फ़ज्र की नमाज़ पढ़ो तो:

سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ وَلَاحَوْلَ

وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ۔

सुबहानल्लाहिल अज़ीमि व बिहम्दिही व ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह।

चार मर्तबा पढ़ा करो तो तुम चार बीमारियों (पागलपन, जुज़ाम, कोढ़, और फ़ालिज) से महफ़ूज़ रहोगे, फिर एक मर्तबा यह दुआ पढ़ा करो:

اَللّٰهُمَّ اهْدِنِيْ مِنْ عِنْدِكَ وَاَفِضْ عَلَيَّ مِنْ

فَضْلِكَ وَانْشُرْ عَلَيَّ مِنْ رَحْمَتِكَ وَاَنْزِلْ عَلَيَّ مِنْ

بَرَكَاتِكَ۔

अल्लाहुम्महदिनी मिन इन्दिक, वअफ़िज़

अलय्य मिन फ़ज़लिक, वंशुर अलय्य मिर्रहमतिक, व अंज़िल अलय्य मिम बरकातिक। रिवायत की तफ़्सील यह है।

फ़ायदा: हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि यल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि क़बसा बिन मुख़ारिक़ रज़ि यल्लाहु अन्हु हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! मैं इस हाल में आप के पास आया हूँ कि मुझ में ताक़त नहीं है, मेरी उम्र ज़्यादा हो गई है, मेरी हड्डियाँ कमज़ोर हो गई हैं, मौत का वक़्त क़रीब है, मैं मुहताज हो गया हूँ और लोगों की निगाह में हल्का हो गया हूँ, मैं आप की ख़िदमत में इस लिए हाज़िर हुआ हूँ ताकि आप मुझे वह मुख़्तसर चीज़ सिखाएं जिस से

अल्लाह तआला मुझे दुनिया और आख़िरत में नफ़ा दे।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: उस ज़ात की क़सम जिस ने मुझे हक़ देकर भेजा है, तुम्हारे इर्द गिर्द जितने पत्थर, दरख़्त और ढेले हैं वह सब तुम्हारी इस बात पर रो पड़े हैं। ऐ क़बीसा! फ़ज्र की नमाज़ के बाद यह दुआ (सुबहानल्लाहिल अज़ीमि व बिहम्दिही पूरा) पढ़ लिया करो, इस से तुम पागल पन, जुज़ाम, कोढ़ और फ़ालिज (और एक रिवायत के मुताबिक़ अंधे पन) से महफ़ूज़ रहोगे और ऐ क़बीसा! आख़िरत के लिए यह चार कलिमात (अल्लाहुम्महदिनी, पूरा) भी पढ़ते रहना।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने

फरमाया कि यह इन कलिमात को बराबर कहते रहे और भूल कर या बेरग़बती से उन्हें न छोड़ा तो जन्नत का कोई दरवाज़ा ऐसा न होगा जो उनके लिए खुला न हो।

७० हाजतें पूरी होंगी

हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि यल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: जब सूरह फ़ातेहा, आयतल कुर्सी, 'शहिदल्लाहु' से 'अल अज़ीज़ुल हकीम' तक और 'कुलिल्लाहुम्म मालिकल मुल्क' से 'बिग़ैरि हिसाब' तक नाज़िल हुईं तो अर्श से मुअल्लक़ होकर अल्लाह तआला से फ़रियाद की कि क्या आप हम को ऐसी क़ौम पर नाज़िल कर रहे हैं जो गुनाहों का इरतिकाब करेगी? इर्शाद फरमाया कि क़सम है मेरी

इज़्ज़त व जलाल और इरतिफ़ाअे मकान की कि जो लोग हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद तुम्हारी तिलावत करेंगे हम उनकी मग़्फ़िरत फ़रमाऐंगे, जन्नतुल फ़िरदोस में जगह देंगे, रोज़ाना ७० मर्तबा नज़रे रहमत से देखेंगे और उनकी ७० हाजतें पूरी करेंगे, जिन में अदना हाजत मग़्फ़िरत है। (रूहुल मआनी)

फ़ायदा: बाज़ रवायतों में है कि हम उनके दुश्मनों पर उनको ग़लबा अता करेंगे। (कंज़ुल उम्माल)

पढ़ने का तरीक़

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ

نَسْتَعِيْنُ ۝ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝

صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ

عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ

سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي

الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ

اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ مَا

خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا

بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ

وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ۝

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا

الْعِلْمِ قَآئِمًا ۢ بِالْقِسْطِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ

الْحَكِيْمُ○

قُلِ اللّٰهُمَّ مَالِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ

تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَنْ

تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ إِنَّكَ

عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ○ تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ

وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ

الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَتَرْزُقُ

مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ○

नमाज़ का पूरा अज्र मिलेगा

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि यल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: जो शख़्स हर नमाज़ के बाद

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ○ وَسَلَامٌ عَلَى

الْمُرْسَلِيْنَ○ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ○

तीन मर्तबा पढ़ेगा वह भरपूर सवाब पाएगा और उसे नमाज़ का पूरा पूरा अज्र मिलेगा।

हुज़ूर صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने फ़रमाया: यह दुआ कभी न छोड़ना

हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि यल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि एक दिन हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरा हाथ पकड़ कर मुझ से फ़रमाया: ऐ मआज़! बख़ुदा मुझे तुम से मुहब्बत है। हज़रत मआज़ रज़ि यल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मेरे माँ बाप आप पर कुरबान, बख़ुदा मुझे भी आप से मुहब्बत है। आप सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम ने फरमाया ऐ मआज़! (इसी मुहब्बत की बिना पर) मैं तुम्हें वसीयत करता हूँ कि किसी नमाज़ के बाद इस दुआ को पढ़ना न छोड़ना।

اَللّٰھُمَّ اَعِنِّیْ عَلٰی ذِکْرِکَ وَشُکْرِکَ وَحُسْنِ عِبَادَتِکَ۔ (الدعا للطبرانی ،جامع ابواب القول فی ادبار الصلوات)

अल्लाहुम्म अअिन्नी अला ज़िक्रिक व शुक्रिक व हुस्नि इबादतिक।

हक़्क़े इबादत अदा हो जाएगा

हज़रत अली रज़ि यल्लाहु अन्हु से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम अलैहिस्सलाम नाज़िल हुए और फरमाया ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! अगर आप चाहें कि रात या दिन की इबादत का

हक़ अदा फ़रमाएं तो यह दुआ पढ़ें:

اَللّٰھُمَّ لَکَ الْحَمْدُ حَمْدًا کَثِیْرًا مَعَ خُلُوْدِکَ،
وَلَکَ الْحَمْدُ حَمْدًا لَا مُنْتَھٰی لَہٗ دُوْنَ عِلْمِکَ،
وَلَکَ الْحَمْدُ حَمْدًا لَا مُنْتَھٰی لَہٗ دُوْنَ مَشِیْئَتِکَ،
وَلَکَ الْحَمْدُ حَمْدًا لَا اَجْرَ لِقَآئِلِہٖ اِلَّا رِضَاکَ۔

(کنز العمال ج ۲ حدیث: ۴۹۵۴)

अल्लाहुम्म लकल हम्दु हम्दन कसीरन मअ ख़ुलूदिक, व लकल हम्दु हम्दन ला मुन्तहा लहू दून इल्मिक, व लकल हम्दु हम्दन ला मुन्तहा लहू दून मशीअतिक, व लकल हम्दु हम्दन ला अजर लिक़ाइलिही इल्ला रिज़ाक।(कंज़ुल उम्माल जि. २ हदीस: ४९५४)

जुमा के चंद क़ीमती आमाल

बेटे के साथ वालिदैन

के भी गुनाह माफ़

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि यल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स जुमा की नमाज़ के बाद

سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ

सुबहानल्लाहिल अज़ीमि व बिहम्दिही

१०० मर्तबा पढ़े तो अल्लाह तआला उसके एक हज़ार गुनाह और उसके वालिदैन के चौबिस हज़ार गुनाह माफ़ फ़रमाऐंगे। (इब्ने सुन्नी, मा यकूल बअद सलातिल जुमअह)

८० साल के गुनाह माफ़

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि यल्लाहु अन्हू की हदीस में ये नक़ल किया गया है कि जो शख़्स जुमा के दिन अस्र की नमाज़ के बाद अपनी जगह से उठने से पहले ८० मर्तबा

यह दुरुद शरीफ़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدِ ِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰی اٰلِهٖ

وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदि निन नबीयिल उम्मिय्यि व अ़ला आलिही व सल्लिम तस्लीमा।

तो उसके ८० साल के गुनाह माफ़ होंगे और उसके लिए ८० साल की इबादत का सवाब लिखा जाएगा (फज़ाइले दरुद)

सुबह और शाम की दुआऐं

रहमत की दुआ भी मिले और शहादत का मर्तबा भी

हज़रत मअक़िल बिन यसार रज़ि यल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया : जो

शख़्स सुबह को तीन मर्तबा:

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○

अऊज़ु बिल्लाहिस्समीअ़िल अ़लीमि मिनश्शैता निर्रजीम।

पढ़े, फ़िर सूरह हश्र की आख़िरी तीन आयात एक मर्तबा पढ़े तो अल्लाह तआला उस पर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मुक़र्रर कर देते हैं जो शाम तक उसके लिए दुआए रहमत करते रहते हैं और अगर उसी दिन उसे मौत आगई तो वह शहीद मरेगा और जो शख़्स शाम को पढ़ ले तो इसी तरह ७० हज़ार फ़रिश्ते सुबह तक उसके लिए दुआए रहमत करते रहते हैं और अगर वह उस रात मर गया तो शहीद मरेगा। (तिर्मिज़ी, किताबु फ़ज़ाइलिल क़ुरआन)

तरतीब यह है कि पहले तीन मर्तबा :

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○

अऊज़ु बिल्लाहिस्समीअ़िल अ़लीमि मिनश्शैता निर्रजीम।

पढ़े, फिर सूरह हश्र की यह आख़िरी तीन आयात एक मर्तबा पढ़े:

هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ
وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ○ هُوَ اللّٰهُ
الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ
السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ
الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ○ هُوَ
اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ
الْحُسْنٰى ؕ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ

وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ○

नेकियों की कमी पूरा कर देने वाला अमल

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि यल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स सुबह होते ही

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ○ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ○ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ○

पढ़ ले तो उसकी (नेकियों में) जो कमी उस दिन रह गई होगी वह पूरी कर दी जाएगी और जो शाम के वक़्त पढ़ ले तो

उसकी (नेकियों में) जो कमी उस रात रह गई होगी वह पूरी कर दी जाएगी। (अबू दाऊद)

अधूरे काम पूरे होंगे

हज़रत अबू दरदा रज़ि यल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर अकरम सल्ल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: जो शख़्स सुबह और शाम सात सात मर्तबा इस दुआ को पढ़े, ख़्वाह सच्चे दिल से पढ़े या झूठे दिल से तो ख़ुदा तआला उसके तमाम कामों की किफ़ालत करेंगे (यानी उसके अधूरे कामों को पाए तकमील तक पहुंचाने के असबाब पैदा फ़रमाऐंगे) वह दुआ यह है:

حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ، عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ○ (ابوداؤد۔حدیث ۵۰۸۱)

हस्बियल्लाहु ला इलाह इल्ला हुव, अलैहि तवक्कलतु व हुव रब्बुल अर्शिल अज़ीम। (अबू दाऊद, हदीस ५०८१)

हाथ पकड़ कर जन्नत में

हज़रत मुनज़िर रज़ि यल्लाहु अन्हु एक अफ़रीक़ी सहाबी हैं, वह रिवायत करते हैं कि मैंने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना कि जो शख़्स सुबह को यह दुआ पढ़ ले:

رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّ بِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّ بِمُحَمَّدٍ

نَبِيًّا (ﷺ)۔

रज़ीतु बिल्लाहि रब्बंव्व बिल इस्लामि दीनंव्व बिमुहम्मदिन नबिय्या (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

तो मैं इस बात का ज़िम्मेदार हूँ कि

उसका हाथ पकड़ कर उसे जन्नत में दाख़िल करा दूँ। (तबरानी फिल मोजम, बाबुल मीम)

एक रिवायत में है कि सुबह व शाम तीन मर्तबा पढ़े। (मजमउज़्ज़वाइद)

जन्नत में दाख़िले का एक और अमल (सय्यदुल इस्तिग़्फ़ार)

हज़रत शद्दाद बिन औफ़ रज़ि यल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने इन कलिमात को शाम के वक़्त पढ़ा और उसी रात उसकी वफ़ात हो गई तो वह जन्नत में दाख़िल होगा। और जिस ने सुबह के वक़्त पढ़ा और उसी दिन उसकी वफ़ात हो गई तो वह जन्नत में दाख़िल होगा। वह कलिमात यह हैं:

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِيْ وَاَنَا

عَبْدُكَ، وَاَنَاْ عَلٰى عَهْدِكَ، وَوَعْدِكَ مَا
اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ
لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِىْ فَاغْفِرْلِىْ،
فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ۔ (بخاری شریف)

अल्लाहुम्म अंत रब्बि ला इलाह इल्ला अंत ख़लक़्तनी व अन अब्दुक व अन अ़ला अहदिक व वअदिक मस्ततअतु अऊज़ू बिक मिन शर्रि मा सनअ़तु अबूउ लक बिनिअ़-मतिक अलय्य व अबूउ बिज़ंम्बी फग़्फिर्ली फ़इन्नहू ला यग़्फ़िरुज़्ज़ुनूब इल्ला अंत। (बुख़ारी)

जो माँगो मिलेगा

हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि हज़रत समुरह इब्ने जुन्दुब रज़ि यल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें एक ऐसी हदीस न सुनाऊँ जो मैंने

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कई मर्तबा सुनी और हज़रत अबू बकर रज़ि यल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ि यल्लाहु अन्हु से भी कई मर्तबा सुनी है? मैंने अर्ज़ किया ज़रूर सुनाऐं। फ़रमाया जो शख़्स सुबह और शाम इन कलिमात को पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ خَلَقْتَنِىْ، وَاَنْتَ تَهْدِيْنِىْ، وَاَنْتَ
تُطْعِمُنِىْ، وَاَنْتَ تَسْقِيْنِىْ، وَاَنْتَ تُمِيْتُنِىْ،
وَاَنْتَ تُحْيِيْنِىْ۔

अल्लाहुम्म अंत ख़लक़्तनी, व अंत तह्दी-नी, व अंत तुतअिमुनी, व अंत तस्क़ीनी, व अंत तुमीतुनी, व अंत तुहयीनी।

फिर अल्लाह तआला से जो माँगो तो अल्लाह तआला ज़रूर उसे वह चीज़ अता फ़रमाएगा। (मजमउज़्ज़वाइद जि. १०)

तमाम नेमतों के हासिल करने की दुआ

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि यल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि हुज़ूर अकरम सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: जो शख़्स सुबह को तीन मर्तबा :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَصْبَحْتُ مِنْكَ فِیْ نِعْمَةٍ وَّعَافِيَةٍ وَّ سِتْرٍ، فَاَتِمَّ عَلَیَّ نِعْمَتَكَ وَعَافِيَتَكَ وَ سِتْرَكَ فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अस्बहतु मिन्क फ़ी नेमतिंव्व आफ़ियतिंव्व सितरिन, फ़अत्मिम अलय्य नेमतक व आफ़ियतक व सितरक फ़िद्दुनिया वल आख़िरह।

और शाम को तीन मर्तबा

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَمْسَيْتُ مِنْكَ فِیْ نِعْمَةٍ وَّعَافِيَةٍ وَّسِتْرٍ، فَاَتِمَّ عَلَیَّ نِعْمَتَكَ وَعَافِيَتَكَ وَسِتْرَكَ فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अमसैतु मिन्क फ़ी नेमतिंव्व आफ़ियतिंव्व सितरिन, फ़अत्मिम अलय्य नेमतक व आफ़ियतक व सितरक फ़िद्दुनिया वल आख़िरह।

पढ़ लिया करे तो अल्लाह तआला के ज़िम्मे है कि वह उस पर अपनी नेमतों को मुकम्मल कर दें।(इब्नुस्सुन्नी)

तमाम नेमतों का शुक्र अदा हो जाए

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ग़न्नाम रज़ि यल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद

फ़रमाया: जिस ने सुबह सवेरे यह दुआ पढ़ ली:

اَللّٰهُمَّ مَا اَصْبَحَ بِيْ مِنْ نِّعْمَةٍ اَوْ بِاَحَدٍ مِّنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ فَلَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ۔

अल्लाहुम्म मा अस्बह बी मिन्निमतिन औ बिअहदिम मिन ख़ल्क़िक फ़मिनक वहदक ला शरीक लक फ़लकल हम्दु व लकश्शुक्र।

तो उसने उस दिन का शुक्र अदा कर दिया और जिसने शाम को यह दुआ पढ़ ली:

اَللّٰهُمَّ مَا اَمْسٰى بِيْ مِنْ نِّعْمَةٍ اَوْ بِاَحَدٍ مِّنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ فَلَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ۔

अल्लाहुम्म मा अमसा बी मिन्निमतिन औ

बिअहदिम मिन ख़ल्क़िक फ़मिनक वहदक ला शरीक लक फ़लकल हम्दु व लकश्शुक्र।

तो उसने उस रात का शुक्र अदा कर दिया। (अबू दाऊद)

तमाम नेमतों की हिफ़ाज़त की दुआ

بِسْمِ اللهِ عَلٰى دِيْنِيْ وَنَفْسِيْ وَوَلَدِيْ وَاَهْلِيْ وَمَالِيْ۔ (کنز العمال جلد ۲ حدیث ۴۹۵۸)

बिस्मिल्लाहि अला दीनी व नफ़्सी व वलदी व अहली व माली। (कंज़ुल उम्माल जि.२)

हर चीज़ के नुक़सान से बचने की दुआ

हज़रत उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि मैंने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना

कि जो बंदा हर रोज़ सुबह और शाम को तीन मर्तबा यह दुआ पढ़ लिया करे:

بِسۡمِ اللهِ الَّذِیۡ لَا یَضُرُّ مَعَ اسۡمِهٖ شَیۡءٌ فِی الۡاَرۡضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ ط وَهُوَ السَّمِیۡعُ الۡعَلِیۡمُ۔

बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला यज़ुर्रू मअस्मिही शैउन फ़िल अर्ज़ि व ला फ़िस्समाइ व हुवस समीउल अलीम।

तो उस को हरगिज़ कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुंचा सकती, एक रिवायत में है कि उस को अचानक कोई मुसीबत नहीं पहुंचती। (अबू दाऊद)

हर नुक़सान और ज़हरीली चीज़ के डसने से हिफ़ाज़त

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि यल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि हुज़ूर अकरम

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: जो शख़्स सुबह और शाम को

اَعُوۡذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنۡ شَرِّ مَا خَلَقَ۔

अऊज़ु बिकलिमातिल्लाहित ताम्माति मिन शर्रि मा ख़लक़।

पढ़ ले तो उसे कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुंचा सकती।

एक दूसरी रिवायत में बिस्तर पर जाते वक़्त पढ़ने का भी तज़किरा है जिस का फ़ायदा यह है कि उस वक़्त पढ़ लेने से हर (ज़हरीली चीज़) के डसने से हिफ़ाज़त होगी। (मजमउज़्ज़वाइद जि. १०)

हर मुसीबत और हादसे से हिफ़ाज़त दुआए हज़रत अबू दरदा रज़ि यल्लाहु अन्हु

हज़रत तल्क़ बिन हबीब रज़ि यल्लाहु

अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी हज़रत अबू दरदा रज़ि यल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा कि तुम्हारा मकान जल गया, उन्होंने फरमाया नहीं जला। फिर दूसरा शख़्स आया और उस ने भी यही ख़बर दी, आप ने फरमाया नहीं जला। तीसरे शख़्स ने आकर यह ख़बर दी कि आग लगी और उसके शरारे बलंद हुए, लेकिन जब तुम्हारे मकान तक आग पहुंची तो बुझ गई। हज़रत अबू दरदा रज़ि यल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मुझ मालूम था कि अल्लाह पाक ऐसा नहीं करेंगे। वह आदमी कहने लगा कि हमें नहीं मालूम कि हम आप की कौनसी बात पर तअज्जुब करें? आया नहीं जला पर (जो आप ने फ़रमाया) या (आप के इस जुमले पर कि) मुझे मालूम था कि अल्लाह

पाक नहीं जलाऐंगे। फ़रमाया मैंने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जो शख़्स सुबह को यह दुआ पढ़ ले तो शाम तक और शाम को पढ़ ले तो सुबह तक किसी मुसीबत और हादसे में गिरफ्तार न होगा, मैंने उस दुआ को पढ़ लिया था। (वह दुआ यह है)

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ، لَا اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ، عَلَيْكَ
تَوَكَّلْتُ، وَاَنْتَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ، مَا
شَآءَ اللّٰهُ كَانَ وَمَا لَمْ يَشَأْ لَمْ يَكُنْ، لَا حَوْلَ
وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ، اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ
قَدِيْرٌ، وَاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَیْءٍ عِلْمًا،
اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِیْ وَمِنْ شَرِّ

كُلِّ دَآبَّةٍ اَنْتَ اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا ؕ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ○ (الدعاء للطبرانی، القول عند الصباح)

अल्लाहुम्म अंत रब्बी ला इलाह इल्ला अंत अ़लैक तवक्कलतु व अंत रब्बुल अर्शिल करीम। माशा अल्लाहु कान व मा लम यशअ़लम यकुन व ला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल। आ़लमु अन्नल्लाह अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर। व अन्नल्लाह क़द अहात बि कुल्लि शैइन इल्मा अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ु बिक मिन शर्रि नफ़्सी व मिन शर्रि कुल्लि दाब्बतिन अंत आख़िज़ुम बिनासियतिहा इन्न रब्बी अ़ला सिरातिम्मुस्त क़ीम। (अद्दुआ लित्तबरानी)

हर शैतान मरदूद और सरकश ज़ालिम के शर से हिफ़ाज़त

दुआ हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि यल्लाहु अन्हु

हज़रत अनस रज़ि यल्लाहु अन्हु पर हज्जाज बिन यूसुफ़ सख़्त नाराज़ हुआ और कहा कि अगर फ़लाँ वजह न होती तो मैं तुम को क़तल कर देता। हज़रत अनस रज़ि यल्लाहु अन्हु ने फरमाया: तू हरगिज़ मुझे क़त्ल नहीं कर सकता, इस लिए कि मुझे हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसी दुआ सिखा दी है जिस के ज़रिए मैं हर शैतान मरदूद और सरकश ज़ालिम के शर से महफ़ूज़ हो जाता हूँ, जब हज्जाज ने सुना तो घुटने के बल बैठ गया और कहा चचा! मुझे भी वह दुआ सिखा दीजिए। हज़रत अनस रज़ि यल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया तू इस का अहल नहीं है, फिर बाद में आप ने वह

दुआ अपने बाज़ लड़कों को बता दी थी।

بِسْمِ اللهِ عَلٰى نَفْسِىْ وَدِيْنِىْ ، بِسْمِ اللهِ عَلٰى مَا اَعْطَانِىْ رَبِّىْ عَزَّوَجَلَّ ، لَا اُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا اَجِرْنِىْ مِنْ كُلِّ شَيْطٰنِ الرَّجِيْمِ وَمِنْ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ، اِنَّ وَلِيِّ ےَ اللهُ الَّذِىْ نَزَّلَ الْكِتَابَ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِيْنَ ، فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِىَ اللهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ۔

(کتاب الدعاء للطبرانی ،القول عند الدخول علی السلطان)

बिस्मिल्लाहि अला नफ़्सी व दीनी, बिस्मिल्लाहि अला मा आतानी रब्बी अज़्ज़ व जल्ल, ला उशरिकु बिही शैअन अजिरनी मिन कुल्लि शैतानिर्रजीमि व मिन कुल्लि जब्बारिन अनीदिन, इन्न वलिय्यिल्लाहुल्लज़ी नज़्ज़लल किताब व हुव यतवल्लस्सालिहीन,

फ़इन तवल्लौ फ़कुल हस्बियल्लाहु ला इलाह इल्ला हुव अलैहि तवक्कलतु व हुव रब्बुल अर्शिल अज़ीम। (किताबुद्दुआ लित्तबरानी)

जब दुश्मन का ख़ौफ़ हो तो यह दुआ पढ़े

हज़रत अबू बुरदा बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु अपने वालिद से नक़ल करते हैं कि उन्होंने बयान किया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब दुश्मन का ख़ौफ़ महसूस फ़रमाते तो यह दुआ पढ़ते:

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِىْ نُحُوْرِهِمْ وَنَعُوْذُبِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ - (ابوداؤد، کتاب الصلوۃ، مایقول اذا خاف قوماً)

अल्लाहुम्म इन्ना नजअलुक फ़ी नुहूरिहिम व नऊज़ुबिक मिन शुरूरिहिम। (अबू दाऊद)

दुश्मन के सामने पढ़ने की दुआ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ، سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔

(مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الدعا)

ला इलाह इल्लल्लाहुल हलीमुल करीम, सुबहानल्लाहि रब्बिल अर्शिल अज़ीमी, वल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन। (किताबुद्दुआ)

नोट: बुज़ुर्गों का तजरबा है कि अगर इस दुआ को दुश्मन के सामने पढ़ा जाए तो इंशा अल्लाह दुश्मन क़ाबू नहीं पा सकता। चुनान्चे हज़रत अबू राफ़े रज़ि यल्लाहु अन्हु से मनक़ूल है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि यल्लाहु अन्हु ने अपनी बेटी की शादी (मजबूरन) हज्जाज बिन यूसुफ़ से कर दी और रूख़सती के वक़्त अपनी बच्ची से कहा कि जब हज्जाज तेरे पास आए तो उस

वक़्त यह दुआ पढ़ लेना। रावी कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि यल्लाहु अन्हु की बेटी ने यह दुआ पढ़ी जिस की वजह से हज्जाज उस के क़रीब न आ सका। नीज़ हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि यल्लाहु अन्हु ने दावे के साथ कहा कि जब हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी सख़्त मुसीबत और रंज व ग़म से दो चार होते तो यह दुआ पढ़ा करते थे। नीज़ वह यह दुआ पढ़ कर बुख़ारज़दा को भी दम करते थे।

दुश्मन के घेरे में भी हिफ़ाज़त

اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِنَا وَاٰمِنْ رَوْعَاتِنَا۔

(مُسندِ احمد، ج۳ حدیث ۱۰۹۷۷)

अल्लाहुम्मस्तुर औरातिना व आमिन रौआतिना। (मुस्नदे अहमद जि. ३ हदीस १०९७७)

तकलीफ़ के ७० दरवाज़े बंद

हज़रत मकहूल रज़ि यल्लाहु अन्हु से मरवी है, वह फ़रमाते हैं कि जो शख़्स यह दुआ पढ़े:

لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّابِاللهِ،وَلَامَلْجَأَمِنَ اللهِ اِلَّااِلَيْهِ۔

ला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाहि व ला मलजअ मिनल्लाहि इल्ला इलैहि।

तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त तकलीफ के ७० दरवाज़े बंद कर देते हैं जिन में अदना तकलीफ तंग दस्ती है। (मुसन्निफ़ इब्ने अबी शीबा जि. १५, स. ३९०)

बीमारी, तंगदस्ती और गुरबत दूर करने की दुआ

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि यल्लाहु अन्हु

फ़रमाते हैं कि एक रोज़ मैं हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ बाहर निकला, इस तरह कि मेरा हाथ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथ में था। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का गुज़र एक ऐसे शख़्स पर हुआ जो बहुत शिकस्ता हाल और परेशान था। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा तुम्हारा यह हाल कैसे हो गया? उस शख़्स ने अर्ज़ किया कि बीमारी और तंगदस्ती ने मेरा यह हाल कर दिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया मैं तुम्हें चंद कलिमात बतलाता हूँ जिन्हें तुम पढ़ोगे तो तुम्हारी बीमारी और तंगदस्ती जाती रहेगी। वह कलिमात यह हैं:

تَوَكَّلْتُ عَلَى الْحَيِّ الَّذِىْ لَا يَمُوْتُ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ

الَّذِىْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّ لَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ

فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ

وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا۝

तवक्कलतु अलल हय्यिल्लज़ी ला यमूतु, अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लम यत्तख़िज़ वलदंव्वलम यकुल्लहू शरीकुन फ़िल्मुल्की व लम यकुल्लहू वलिय्युम मिनज़्ज़ुल्लि व कब्बिरहु तकबीरा।

इस वाक़ऐ के कुछ अरसे बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस तरफ़ तशरीफ़ ले गए तो उसको अच्छे हाल में पाया, आप ने ख़ुशी का इज़हार फ़रमाया। उस ने अर्ज़ किया कि जब से आप ने मुझे यह कलिमात बतलाए हैं मैं पाबंदी से उन कलिमात को पढ़ता हूँ। (मुस्नदे अबू यअली)

बेहतरीन रिज़्क़ और बुराईयों से हिफ़ाज़त की दुआ

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि यल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर अकर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स सुबह में यह दुआ पढ़ ले उस दिन बेहतरीन रिज़्क़ से नवाज़ा जाएगा और बुराइयों से महफ़ूज़ रहेगा।

مَا شَآءَ اللّٰهُ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ، اَشْهَدُ

اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ۔ (ابن السنی، مایقول اذا اصبح)

माशाअल्लाह ला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाहि, अशहदु अन्नल्लाह अला कुल्लि शैइन क़दीर। (इब्ने सुन्नी)

क़र्ज़ की अदाएगी और मुसीबतों को दूर करने की दुआ

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि यल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि एक रोज़ हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिद में दाख़िल हुए तो एक अंसारी सहाबी पर निगाह पड़ी जिनका नाम अबू अमामा (रज़ि यल्लाहु अन्हु) था। आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया ऐ अबू अमामा! क्या बात है, तुम ग़ैरे नमाज़ के वक़्त मस्जिद में बैठे नज़र आ रहे हो? उन्होंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! मुझे परेशानियों और क़र्ज़ों ने जकड़ रखा है, हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : मैं तुम्हें दुआ का ऐसा तोहफ़ा न पेश करूँ कि जब तुम उसे पढ़ने लगो तो अल्लाह तआला तुम्हारी परेशानी को दूर फ़रमा दे और तुम्हारे क़र्ज़ को भी अदा कर

दें? अर्ज़ किया क्यों नहीं या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया सुबह और शाम यह दुआ पढ़ा करो:

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُبِکَ مِنَ الۡھَمِّ وَ الۡحَزَنِ، وَاَعُوۡذُبِکَ مِنَ الۡعَجۡزِ وَالۡکَسَلِ، وَاَعُوۡذُبِکَ مِنَ الۡجُبۡنِ وَالۡبُخۡلِ، وَاَعُوۡذُبِکَ مِنۡ غَلَبَۃِ الدَّیۡنِ وَقَھۡرِ الرِّجَالِ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिनल हम्मि वल हज़नि,व अऊज़ुबिक मिनल अज़्ज़ि वल कसलि, व अऊज़ुबिक मिनल जुब्नि वल बुख़्लि, व अऊज़ुबिक मिन ग़लबतिद्दैनि व क़हरिर्रिजाल।

हज़रत अबू अमामा रज़ि यल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने इसी तरह किया, पस

अल्लाह ने मेरी परेशानी को भी दूर कर दिया और मुझ से क़र्ज़ को भी उतार दिया। (अबू दाऊद)

दुनिया तेरे क़दमों में

हज़रत आइशा रज़ि यल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया : जब अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को ज़मीन पर उतारा तो वह उठ कर मुक़ामे काबा में आए और दो रकअत नमाज़ पढ़ कर इस दुआ को पढ़ा। अल्लाह तआला ने उसी वक़्त वही भेजी कि ऐ आदम! मैंने तेरी तौबा क़बूल की, तेरा गुनाह माफ़ किया और तेरे अलावा जो कोई मुझ से उन कलिमात के ज़रिए दुआ करेगा मैं उसके भी गुनाह माफ़ कर दूंगा और उसकी मुहिम को फ़तह कर

दूंगा और शयातीन को उस से रोक दूंगा और दुनिया उसके दरवाज़े पर नाक रगड़ती चली आएगी, अगरचे वह उसको देख न सके, वह दुआ यह है:

اَللّٰھُمَّ اِنَّکَ تَعْلَمُ سِرِّیْ وَعَلَانِیَتِیْ فَاقْبَلْ مَعْذِرَتِیْ، وَتَعْلَمُ حَاجَتِیْ فَاَعْطِنِیْ سُؤْلِیْ، وَتَعْلَمُ مَا فِیْ نَفْسِیْ فَاغْفِرْلِیْ ذَنْبِیْ اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ اِیْمَانًا یُّبَاشِرُ قَلْبِیْ وَ یَقِیْنًا صَادِقًا حَتّٰی اَعْلَمَ اَنَّہٗ لَا یُصِیْبُنِیْ اِلَّا مَا کَتَبْتَ لِیْ وَ رِضًا بِمَا قَسَمْتَ لِیْ۔ (المعجم الاوسط باب من اسمہ محمد)

अल्लाहुम्म इन्नक तअलमु सिर्री व अला-नियती फ़क़्बिल मअज़िरती, व तअलमु हाजती फ़आतिनी सूली, व तअलमु मा फ़ी नफ़्सी फ़ग़्फ़िरली ज़ंबि, अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक

ईमानंय्युबाशिरू क़ल्बी व यक़ीनन सादिक़न हत्ता आलम अन्नहू ला युसीबुनी इल्ला मा कतबत ली व रिज़म बिमा क़समत ली। (अल मोजमुल औसत)

ग़मों को मुसर्रत से बदलने के लिए

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: जब किसी को कोई ग़म, परेशानी या फ़िक्र लाहिक़ हो तो वह यह दुआ पढ़े, अल्लाह तआला उसकी बरकत से न सिर्फ़ उसकी परेशान को दूर फ़रमा देंगे बल्कि उसके ग़मों को ख़ुशी और राहत में तबदील फ़रमा देंगे। सहाबए किराम (रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन) ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! हम लोग उसे याद न कर लें? आप सल्ल- ल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम भी उसे याद कर लो और तम्हारे

अलावा जो भी इस दुआ को सुने, उसे भी चाहिए कि वह उसे याद कर ले।

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ عَبْدُكَ وَابْنُ عَبْدِكَ وَابْنُ اَمَتِكَ نَاصِيَتِیْ بِيَدِكَ مَاضٍ فِیَّ حُكْمُكَ عَدْلٌ فِیَّ قَضَاؤُكَ، اَسْاَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَ لَكَ سَمَّيْتَ بِهٖ نَفْسَكَ، اَوْ اَنْزَلْتَهٗ فِیْ كِتَابِكَ، اَوْ عَلَّمْتَهٗ اَحَدًا مِّنْ خَلْقِكَ، اَوِ اسْتَاْثَرْتَ بِهٖ فِیْ عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ، اَنْ تَجْعَلَ الْقُرْاٰنَ رَبِيْعَ قَلْبِیْ وَنُوْرَ صَدْرِیْ وَجَلَاۗءَ حُزْنِیْ وَذَهَابَ هَمِّیْ۔ (مجمع الزوائد، باب مایقول اذا اصابہ ہم)

अल्लाहुम्म इन्नी अब्दुक वब्नु अब्दिक वब्नु अमतिक नासियती बियदिक माज़िन फिय्य हुक्मुक अदलुन फ़िय्य क़ज़ाउक, अस्अलुक बिकुल्लिस्मिन हुव लक सम्मैत बिही

नफ्सक, औ अंज़लतहू फ़ी किताबिक, और अल्लमतहू अहदम मिन ख़ल्क़िक़, अविस्तासरत बिही फ़ी इल्मिल ग़ैबि इन्दक, अंतज्अलल कुरआन रबीअ क़ल्बी व नूर सदरी व जलाअ हुज़नी व ज़हाब हम्मी। (मजमउज़्ज़वाइद)

नेकियाँ ही नेकियाँ

अल्लाह की रहमत के साए में

जो शख़्स सूरह अनाम की मुन्दर्जा ज़ेल (नीचे की) तीन आयतें:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ۬ ثُمَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا
بِرَبِّهِمْ یَعْدِلُوْنَ ○ هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ
طِیْنٍ ثُمَّ قَضٰۤى اَجَلًا ؕ وَاَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ
ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ○ وَهُوَ اللّٰهُ فِی السَّمٰوٰتِ

وَفِی الْاَرْضِ ؕ یَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ
وَیَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ○

पढ़ेगा तो उसके लिए ४० हज़ार फ़रिश्ते मुक़र्रर किए जाऐंगे, जो क़ियामत तक इबादत करते रहेंगे, उसका सारा सवाब पढ़ने वाले के नामए आमाल में लिखा जाएगा। और एक फ़रिश्ता आसमान से लोहे का गुर्ज़ लेकर नाज़िल होता है, जब पढ़ने वाले के दिल में शैतान वसवसे डालता है तो वह फ़रिश्ता उस गुर्ज़ से उसकी ख़बर लेता है। ७० परदे बीच में हायल हो जाते हैं, क़ियामत के दिन अल्लाह तआला फ़रमाऐंगे तू मेरे ज़ेरे साया चल, जन्नत के फल खा, हौज़े कौसर का पानी पी, सलसबील की नहर में नहा, तू मेरा बंदा मैं तेरा रब। (हाशिया अस्सावी सूरह अनाम)

मैं ही उसका जज़ा दूंगा

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि यल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: अल्लाह तआला के एक नेक बंदे ने यह दुआ पढ़ी:

يَا رَبِّ لَكَ الْحَمْدُ كَمَا يَنْبَغِي لِجَلَالِ وَجْهِكَ

وَلِعَظِيمِ سُلْطَانِكَ

या रब्बि लकल हम्दु कमा यंबग़ी लिजलि वजहिक व लिअज़ीमि सुलतानिक।

तो उसका सवाब लिखना फ़रिश्तों पर दुशवार हो गया। वह आसमान पर पहुंचे और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के हुज़ूर अर्ज़ किया कि ऐ हमारे रब! आप के एक बंदे ने एक ऐसा कलिमा कहा है जिस का सवाब लिखना हम नहीं जानते कि कैसे लिखें।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त यह जानते हुए भी कि उस बंदे ने यह दुआ पढ़ी है, फ़रिश्तों से सवाल करते हैं कि मेरे इस बंदेने क्या पढ़ा? तो फ़रिश्तों ने वह कलिमात पढ़ कर बतलाए।

يَا رَبِّ لَكَ الْحَمْدُ كَمَا يَنْبَغِي لِجَلَالِ وَجْهِكَ

وَلِعَظِيمِ سُلْطَانِكَ۔

या रब्बि लकल हम्दु कमा यंबग़ी लिज- लालि वजहिक व लिअज़ीमि सुलतानिक।

तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने फ़रमाया कि फ़िलहाल इसी तरह लिख लो जिस तरह उसने पढ़ा है, जब मेरा यह बंदा मुझे मिलेगा उस वक़्त मैं ही उन कलिमात की जज़ा उसे दूंगा। (इब्ने माजा)

जितने मोमिन उतनी नेकियाँ

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि यल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : जो शख़्स रोज़ाना

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ

अल्लाहुम्मग़्फ़िरली व लिल मुमिनीन वल मुमिनाति।

पढ़े तो अल्लाह तआला हर मोमिन (मर्द और औरत) के बदले एक नेकी उसके नामए आमाल में लिख देते हैं। (मजमउज़्ज़वाइद)

नोट: चूंकि तमाम अंबिया पर ईमान लाने वाले मोमिन थे, लिहाज़ा इस दुआ के पढ़ने पर जितनी नेकियाँ मिलेंगी उसका इल्म सिर्फ़ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ही को है।

हर वक़्त दुरूद पढ़ने वालों में शुमार होगा

शैख़ुल इस्लाम हज़रत अबुल अब्बास रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया: जो शख़्स सुबह और शाम तीन मर्तबा यह दरूद शरीफ़ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ فِيْ اَوَّلِ كَلَامِنَا،

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ فِيْ اَوْسَطِ كَلَامِنَا،

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ فِيْ اٰخِرِ كَلَامِنَا۔

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन फ़ी अव्वलि कलामिना, अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन फ़ी औसति कलामिना, अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन फ़ी आख़िरि कलामिना।

तो गोया वह सुबह और शाम के तमाम

औक़ात में दरूद पढ़ता रहा। (स.१९१)

अल्लाह तआला की मुहब्बत हासिल करने की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ حُبَّكَ، وَحُبَّ مَنْ يُّحِبُّكَ، وَالْعَمَلَ الَّذِیْ يُبَلِّغُنِیْ حُبَّكَ، اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ حُبَّكَ اَحَبَّ اِلَیَّ مِنْ نَّفْسِیْ وَاَهْلِیْ وَمِنَ الْمَآءِ الْبَارِد۔ (ترمذی، جلد ثانی ص ۱۸۷)

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक हुब्बक, व हुब्ब मंय्युहिब्बुक, वल अमलल्लज़ी युबल्लिगुनी हुब्बक, अल्लाहुम्मजअल हुब्बक अहब्ब इलय्य मिन्नफ़्सी व अहली व मिनल माइल बारिद। (तिर्मिज़ी जि. २ स. १८७)

वालिदैन के हुक़ूक़ की अदाएगी के लिए दुआ

अल्लामा ऐनी रहमतुल्लाह अलैह ने शरह बुख़ारी में एक हदीस नक़्ल की है कि जो शख़्स एक मर्तबा यह दुआ पढ़े और उसके बाद यह दुआ करे कि या अल्लाह! इस का सवाब मेरे वालिदैन को पहुंचा दे, तो उस ने वालिदैन का हक़ अदा कर दिया, वह दुआ यह है:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ، رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَ رَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ، وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ، لِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ، وَلَهُ الْعَظَمَةُ فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ، هُوَ الْمَلِكُ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَرَبُّ الْاَرْضِ رَبُّ الْعٰلَمِیْنَ، وَلَهُ النُّوْرُ فِی

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ۔

अल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन, रब्बिस्समावाति व रब्बिल अर्ज़ि रब्बिल आलमीन व लहुल किब्रियाउ फ़िस्समावाति वल अर्ज़ि व हुवल अज़ीज़ुल हकीम, लिल्ला-हिल हम्दु रब्बिस समावाति व रब्बिल अर्ज़ि रब्बिल आलमीन व लहुल अज़मतु फ़िस्स-मावाति वल अर्ज़ि व हुवल अज़ीज़ुल हकीम, वहुल मलिकुल रब्बुस्समावाति व रब्बुल अर्ज़ि रब्बुल आलमीन व लहुन्नूरू फ़िस्समावाति वल अर्ज़ि व हुवल अज़ीज़ुल हकीम।

जिन की दुआओं से ज़मीन वालों को रिज़्क़ दिया जाता है

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ

وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ۔

अल्लाहुम्मग़्फ़िर ली व लिल मुमिनीन वल मुमिनाति वल मुस्लिमीन वल मुस्लिमात।

फ़ायदा: हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स दिन में २५ या २७ मर्तबा तमाम मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के लिए मग़्फ़िरत की दुआ मांगेगा वह अल्लाह तआला के नज़दीक उन मुस्तजाबुद्दावात (जिनकी दुआऐं अल्लाह के यहाँ क़बूल होती हैं) लोगों में शामिल हो जाएगा, जिन की दुआओं से ज़मीन वालों को रिज़्क़ दिया जाता है। (तबरानी)

अल्लाह पाक जिसके साथ ख़ैर का इरादा फ़रमाते हैं

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत बरीदा असलमी रज़ि यल्लाहु अन्हु से फ़रमाया कि ऐ बुरीदा! अल्लाह पाक

जिसके साथ ख़ैर का इरादा फ़रमाते हैं उसको यह कलिमात सिखा देते हैं:

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ ضَعِيْفٌ فَقَوِّ فِيْ رِضَاكَ ضُعْفِيْ،
وَخُذْ اِلَى الْخَيْرِ بِنَاصِيَتِيْ، وَاجْعَلِ الْاِسْلَامَ
مُنْتَهٰى رِضَآئِيْ، اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ ضَعِيْفٌ فَقَوِّنِيْ،
وَاِنِّيْ ذَلِيْلٌ فَاَعِزَّنِيْ، وَاِنِّيْ فَقِيْرٌ فَارْزُقْنِيْ۔

अल्लाहुम्म इन्नी ज़ईफुन फ़क़व्विफ़ी रिज़ाक ज़ुअफ़ी, व ख़ुज़ इलल ख़ैरि बिना-सियती, वजअलिल इस्लाम मुन्तहा रिज़ाई, अल्लाहुम्म इन्नी ज़ईफुन फ़क़व्विनी, व इन्नी ज़लीलुन फ़अइज़्ज़नी, व इन्नी फ़क़ीरू फ़र्ज़ुक़नी।

नीज़ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी फ़रमाया कि जिसको अल्लाह तआला यह कलिमात सिखते हैं वह मरते दम तक नहीं भूलते। (मुस्तदरक)

बड़े नफ़े की दुआ

اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ قُدْرَتِكَ، وَاَدْخِلْنِيْ فِيْ
رَحْمَتِكَ، وَاقْضِ اَجَلِيْ فِيْ طَاعَتِكَ وَاخْتِمْ
لِيْ بِخَيْرِ عَمَلِيْ، وَاجْعَلْ ثَوَابَهُ الْجَنَّةَ۔ (کنزالعمال جلد ۲ ص ۲۰۲)
اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِاُمَّةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ،
اَللّٰهُمَّ ارْحَمْ اُمَّةَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ،
اَللّٰهُمَّ اَصْلِحْ اُمَّةَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ،
اَللّٰهُمَّ تَجَاوَزْ عَنْ اُمَّةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ،
اَللّٰهُمَّ فَرِّجْ كُرَبَ اُمَّةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ،
اَللّٰهُمَّ اهْدِ النَّاسَ وَالْجِنَّ جَمِيْعًا۔
اَللّٰهُمَّ اهْدِنَا وَاهْدِ بِنَا۔
اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ عَلٰى طَاعَتِكَ، يَا قَوِيُّ

الْقَادِرُ الْمُقْتَدِرُ قَوِّنِیْ وَقَلْبِیْ۔

अल्लाहुम्म आफ़िनी फ़ी कुदरतिक, व अदख़िलनी फ़ी रहमतिक, वक़्ज़ि अजली फ़ी ताअतिक वख़्तिम ली बिख़ैरि अमली वजअल सवाबहुल जन्नह।(कंज़ुल उम्माल जि. २ स. २०२)

अल्लाहुम्मग़्फ़िर लिउम्मति मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, अल्लाहुम्मरहम उम्मत मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम। अल्लाहुम्म अस्लिह उम्मत मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम। अल्लाहुम्म तजावज़ अन उम्मति मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाहुम्म फर्रिज कुरब उम्मति मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, अल्लाहुम्महदिन्नास वल जिन्न जमीआ अल्लाहुम्महदिना वहदिबिना।

अल्लाहुम्म इन्ना नस्तअीनुक अला ताअतिक या क़विय्युल क़ादिरूल मुक़्तदिरू क़व्विनी व क़लबी।

एक में सब कुछ

हज़रत अबू अमामा रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! आप ने बहुत सी दुआऐं बताई हैं, वह सारी दुआऐं मुझे याद नहीं रहतीं, उस पर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क्या मैं तुम को कोई ऐसी दुआ न बता दूँ जो सब दुआओं को शामिल हो जाए? (उन के हाँ कहने पर) हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ तालीम फ़रमाई:

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَأَلَكَ مِنْهُ

نَبِیُّكَ مُحَمَّدٌ (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) وَنَعُوذُبِكَ

مِنْ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ (صَلَّى اللّٰهُ

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ)، وَاَنْتَ الْمُسْتَعَانُ، وَعَلَيْكَ الْبَلَاغُ،

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ۔

(ترمذی کتاب الدعوات)

अल्लाहुम्म इन्ना नस्अलुक मिन ख़ैरि मा सअलक मिन्हु नबिय्युक मुहम्मदुन (सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम) व नऊज़ुबिक मिन शर्रि मस्तआज़ मिन्हु नबिय्युक मुहम्म्दुन (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) व अंतल मुस्तआनु, व अलैकल बलाग़ु, व ला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाहि। (तिर्मिजी)

सलातन तुनज्जीना

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى

اٰلِ سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُنَجِّيْنَا بِهَا

مِنْ جَمِيْعِ الْاَهْوَالِ وَالْاٰفَاتِ، وَتَقْضِىْ لَنَا

بِهَا جَمِيْعَ الْحَاجَاتِ، وَتُطَهِّرُنَا بِهَا مِنْ جَمِيْعِ

السَّيِّئَاتِ، وَتَرْفَعُنَا بِهَا عِنْدَكَ اَعْلَى الدَّرَجَاتِ،

وَتُبَلِّغُنَا بِهَا اَقْصَى الْغَايَاتِ مِنْ جَمِيْعِ

الْخَيْرَاتِ فِى الْحَيٰوةِ وَبَعْدَ الْمَمَاتِ، اِنَّكَ عَلٰى

كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ۔ (القول البدیع ص ۲۱۰)

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिनंव्व अला आलि सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिन सलातन तुनज्जीना बिहा मिन जमीअिल हाजाति, व तुतह्हिरूना बिहा मिन जमीअिस्सय्यिआति, व तरफ़अुना बिहा इन्दक अलद्दर्जाति, व तुबल्लिग़ना बिहा अक़सल ग़ायाति मिन जमीअिल ख़ैराति फ़िल हयाति व बअदल ममाति, इन्नक अला कुल्लि शैइन क़दीर। (अल क़ौलिल बदीअ स. २१०)

शैख़ुल इस्लाम हजरत मौलाना सयद हुसैन अहमद मदनी रह० आफात से तहफ़्फ़ुज़ के लिए इस दुरूद पाक के बाद इशा ७० मर्तबा पढ़ने को फ़रमाया करते थे।

हज की दुआऐं

तलबिया

لَبَّيْكَ اللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ،لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ

لَبَّيْكَ، اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ

لَاشَرِيْكَ لَكَ۔ (بخاری شریف)

लब्बैक अल्लाहुम्म लैब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक, इन्नल हम्द वन्निअमत लक वल मुल्क ला शरीक लक।(बुख़ारी शरीफ)

दुआए अरफ़ात

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद

फ़रमाया: जो मुसलमान अरफ़ा के दिन ज़वाल के बाद मैदाने अरफ़ात में क़िब्ला रूख़ होकर सौ मर्तबा

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ،لَهُ الْمُلْكُ

وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ط

ला इलाह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीक लहू, लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हुव अला कुल्लि शैइन क़दीर, पढ़े फिर

قُلْ هُوَ اللهُ اَحَدٌ ۝ اَللهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ ۙ

وَلَمْ يُوْلَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝

सौ मर्तबा पढ़े और फ़िर यह दुरूद:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا

صَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ،اِنَّكَ

حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ،وَعَلَيْنَا مَعَهُمْ۔

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैत अला इबराहीम व अला आलि इबराहीम इन्नक हमीदुम मजीदुन व अलैना मअहुम। (१०० मर्तबा)

सौ मर्तबा पढ़ेगा तो अल्लाह तआला फरिश्तों से फरमाऐंगे ऐ मेरे फरिश्तो! उस बंदे की क्या जज़ा है जिस ने मेरी तस्बीह व तहलील, तकबीर व ताज़ीम, तारीफ़ व सना की और मेरे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर दुरूद भेजा? ऐ मेरे फरिश्तो! गवाह रहो मैंने इसको बख़्श दिया और इस की शिफ़ाअत क़बूल की। अगर वह अहले अरफ़ात के लिए शिफ़ाअत करता तो भी मैं क़बूल करता। (बेहक़ी, बाबुल मनासिक)

रौज़ए अक़दस पर पढ़ा जाने वाला सलाम

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللهِ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَيْرَ خَلْقِ اللهِ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَبِيْبَ اللهِ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدَ الْمُرْسَلِيْنَ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَاتَمَ النَّبِيِّيْنَ۔

अस्सलामु अलैक या रसूलल्लाहि, अस्सलामु अलैक या नबिय्यल्लाहि, अस्सलामु अलैक या ख़ैर ख़ल्क़िल्लाहि, अस्सलामु अलैक या हबीबल् लाहि, अस्सलामु अलैक या सय्यिदल मुरसलीन,अस्सलामु अलैक या ख़ातमन्नबीन।

मरने से पहले मौत की तैयारी कीजिए!

अज़ इफ़ादात: हज़रत मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी साहब

क्या आप ने वसीयत नामा लिख लिया है?
क्या आप ने तौबा कर ली है?
क्या आप ने क़र्ज़ अदा कर दिया है?
क्या आप ने बीवी का महर अदा कर दिया?
क्या आप ने तमाम माली हुकूक़ अदा कर दिए हैं?
क्या आप ने तमाम जानी हुकूक़ अदा कर दिए हैं?
क्या आप के ज़िम्मे कोई नमाज़ बाक़ी है?
क्या आप के ज़िम्मे कोई रोज़ा बाक़ी है?
क्या आप के ज़िम्मे ज़कात बाक़ी है?
क्या आप के ज़िम्मे हज बाक़ी है?

ज़रा ध्यान दें!

मज़कूरा तमाम आमाल से उसी वक़्त पूरा पूरा नफ़ा हो सकता है जब कि...
पाँचों वक़्त की नमाज़ों का ऐहतिमाम हो रहा हो,
मख़्लूक़ के हुक़ूक़ की अदाएगी हो रही हो,
गुनाहों से परहेज़ किया जा रहा हो,
नीज़ हराम और मुशतबह माल से भी बचा जा रहा हो

मशक़्क़त के ख़ौफ़ से नेकियाँ मत छोड़
मशक़्क़त जाती रहेगी नेकियाँ बाक़ी रहेगी
लज़्ज़त के शौक़ में गुनाह न कर
लज़्ज़त जाती रहेगी गुनाह बाक़ी रहेगा